UPA
IMPACT FACTOR 5.473(SJIF)
UPA NATIONAL E-JOURNAL
Interdisciplinary Peer-Reviewed Indexed Journal
Special Issue : Volume -9 : Issue-1 (March-2023)
ISSN 2455-4375

नारी सम्मान और श्रीरामचरितमानस

डॉ सी.पी. गुप्ता
सहायक प्राध्यापक (इतिहास)
स्वामी विवेकानंद शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय हरदा मध्यप्रदेश
मो.नं.- 7974824118
Email Id - chandrapal.gupta@yahoo.com

सारांश:-

श्रीरामचरितमानस विश्व का सबसे महानतम भक्ति महाकाव्य के रूप में जाना जाता है और इसकी महत्ता इससे सुनिश्चित होती है कि इसे भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में निवासरत् हिंदुओं के घरों में देखा और सुना जा सकता है। श्रीरामचरितमानस जहां एक ओर विश्व का अद्वितीय साहित्यक एवं भक्ति ग्रंथ है तो वहीं, यह अद्भुत प्रबंध महाकाव्य भी है और इसीलिए इसके कथोपकथन पात्र की परंपरागत छवि, नियत और स्वभाव के सर्वथा अनुकूल रखने की कोशिश की गई है। चूंकि यह ग्रंथ मूलतः अवधी भाषा में लिखा गया है और यह दोहा, चौपाई, छंद और सोरठा की मात्राओं पर पूर्णतः अनुशासित और आबद्ध है, इसी कारण कई स्थानों पर शब्दों का चयन मात्रा एवं भाषा की सुगमता के लिए किया गया है। अतः ऐसे शब्दों का अर्थ शब्दार्थ के साथ-साथ भावार्थ और उसके प्रसंगार्थ समझना ही स्वयं की समझदारी होगी। श्रीरामचरितमानस एक विशाल महाकाव्य है यह सात कांडों में विभाजित हैं और इसमें 12800 पंक्तियां हैं इसमें से कुल 1073 दोहे हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने इसमें लगभग 22000 शब्दों का प्रयोग किया है। जिस समय इसकी रचना की गयी उस समय भारत में मुगलों की एकछत्र राजनीतिक सत्ता स्थापित हो चुकी थी और हिंदू समाज पूरी तरह से निराशा के गर्त में पड़ा कराह रहा था। तभी सूरदास ने जहां एक ओर हंसते-खेलते श्रीकृष्ण का वर्णन करके तत्कालीन समाज में निराशा को नव चेतना और उल्लास में परिवर्तित किया, वहीं दूसरी ओर तुलसीदास ने अपने श्रीरामचरितमानस के द्वारा मानव को आशावादी और कर्मशील बनने की प्रेरणा दी।

तुलसीदास जी ने राजसत्ता को आईना दिखाने के लिए भी इस ग्रंथ की रचना की थी। इसीलिए उन्होंने आदर्श रामराज्य की कल्पना की ओर तत्कालीन राजा को अप्रत्यक्ष रूप से अपनी शासन व्यवस्था में सुधार करने हेतु प्रेरित किया। जब एक बार अकबर का सिपहसालार और दरबारी नवरत्न अब्दुर्रहीम खानखाना ने तुलसीदास जी से अकबर की प्रशासनिक व्यवस्था की तारीफ की तब तुलसीदास जी ने जवाब दिया था कि निश्चित तौर पर खानखाना साहब आपके शहंशाह अकबर ने शासन व्यवस्था का पुनर्गठन किया है और उसमें सुधार भी किया है किंतु उसमें अभी भी न्याय, मानवता और सामाजिक समानता स्थापित करने की जरूरत है।

मुख्य कुंजी शब्द:- ताड़ना, कुदृष्टि , मायाँ , अनल, नारा, धरनी, सिखावन

भूमिका :-

श्रीरामचरितमानस एक ऐसा भक्ति काव्य है, जिसमें जातीय समरसता, लैंगिक समानता, सामाजिक संगठन, आर्थिक नीतियां और करारोपण, राजनीतिक लोकतांत्रिक व्यवस्था, नैतिक नियम, मानवीय मूल्यों और दायित्वों

को विभिन्न पात्रों के माध्यम से प्रभावोत्पादक तरीके से प्रदर्शित किया गया है। इस बात का गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपने प्रबंध काव्य श्रीरामचरितमानस में विशेष ध्यान रखा है कि जिस पात्र की जनमानस में जो छवि है, उस छवि के अनुकूल ही उससे कथन उच्चारित करवाए जाएं। गोस्वामी तुलसीदास जी को राम भक्ति शाखा का अनन्य उपासक माना जाता है, किंतु वे जितने राम के प्रति समर्पित और श्रद्धालु हैं उससे किसी भी दृष्टिकोण से वे सीता के प्रति लघुत्तर भाव नहीं रखते हैं। गोस्वामी तुलसीदास के अराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम सभी जाति, धर्म, वर्ग, लिंग और समुदाय के प्रति समभाव रखते हैं वे लिखते हैं कि-

भगतिवंत अति नीचउ प्रानी। मोहिं प्रानप्रिय अस मम बानी।।

अर्थात श्रीरामचरितमानस के माध्यम से तुलसीदास जी राम से कहला रहे हैं कि समाज का कोई भी व्यक्ति चाहे वह समाज के सबसे निचले तबके का या किसि भी लिंग का क्यों ना हो परंतु यदि उसमें भक्ति भाव है, तो वह मुझे अपने प्राणों से भी प्रिय है। पुन: आगे कहते हैं कि-

रामहि केवल प्रेम पिआरा। जान लेउ जो जाननिहारा।।

अर्थात राम को जाति, धर्म या लिंग से कुछ भी लेना देना नहीं है, वे केवल प्रेम के बंधन से बंधे हुए हैं और जो उनसे प्रेम करता है वही उन्हें जान सकता है।

सामान्यत: गोस्वामी तुलसीदास जी पर यह आरोप लगाया जाता है कि वह नारी निंदक थे किंतु उनका स्त्रियों के प्रति यह प्रेम और सम्मान ही है कि जो सृष्टि के रचयिता ब्रह्मा पर ही स्त्री जाति को पराधीन रखने के लिए कोसते हुए कहते हैं -

कत बिधि सृजीं नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं।।

अर्थात हे विधाता आपने इस संसार में स्त्री जाति को पैदा ही क्यों किया है? जो दूसरों के अधीन है और दूसरे के अधीन रहने वाले को सपने में भी सुख की प्राप्त नहीं होती।

श्रीरामचरितमानस बहुजन हिताय बहुजन सुखाय के आदर्श को चरितार्थ करता है। इसमें तत्कालीन पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और राजनैतिक बैरभाव और राग-द्वेष को समाप्त कर समन्यवादिता पर जोर दिया गया है। साथ ही तत्कालीन समाज में व्याप्त वैमनुष्यता, कटुता, अलगाव, असमानता को समाप्त कर 'आपसी भाईचारा, प्रेम, सद्भाव, सहानुभूति, सौहार्द्र और समरसता स्थापित करने को प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने रामचरितमानस के माध्यम से हिंदू धर्म दर्शन के गूढ़ विचारों को बहुत ही सुंदर और सरलतम शब्दों में व्यक्त करने में सफलता प्राप्त की है और सगुण व निर्गुण भक्ति के बीच के भेद को लगभग समाप्त कर दिया है। तुलसीदास श्रीराम के प्रति पूर्णत: समर्पित हैं और वे उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में भी स्थापित करने की कोशिश करते हैं।

चूंकि श्रीरामचरितमानस प्रत्येक हिंदू के घर में विद्यमान हैं और आज भी अपने कल्याण और मंगल कामना के लिए भगवान श्री राम के जीवन चरित्र पर आधारित इस ग्रंथ का पाठ कराया जाता है। स्वाभाविक है कि इसकी बढ़ती लोकप्रियता और समाज को एकजुट करने की इसकी स्वीकार्यता, सामर्थ्य और समन्वयवादी प्रकृति को देखते हुए समय-समय पर इसकी एक चौपाई- **ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी।।** को लेकर श्रीरामचरितमानस पर नारी निंदक होने का आरोप लगाया जाता रहा है।

उपरोक्त चौपाई के अतिरिक्त यदि स्वतंत्र और निष्पक्ष निंदक श्रीरामचरितमानस में अन्यत्र प्रसंगों में नारी की योग्यता, महिमा, सम्मान, समझदारी और गरिमा का अवलोकन करेंगे तो वे भी स्वतः इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे की पूरे

ग्रंथ में नारी के सम्मान के प्रहरी तुलसीदास आखिर नारी के प्रति इतने निष्ठुर कैसे हो गए? स्वमेव सिद्ध है की या तो इन पंक्तियों का वर्तमान में अर्थ का अनर्थ निकाला जा रहा है या फिर यह पंक्तियां हो सकता है कि उपनिवेशवादी और साम्राज्यवादी शक्तियों के द्वारा फूट डालो और शासन करो की नीति के अंतर्गत परिवर्तित करके इस पवित्र ग्रंथ में अंत:स्थापित की गई हों, जैसा कि अन्य भारतीय धार्मिक और पौराणिक ग्रंथों में भी किया गया है, और उनका अब पर्दाफाश हो गया है तथा धीरे-धीरे और भी हो रहा है।

आलोचकों द्वारा सामान्यतः इसका अर्थ यही निकाला जाता है कि **ढोल गंवार शूद्र पशु और नारी ताड़ना के लायक हैं** किंतु वास्तव में ताड़ना का मतलब देखभाल और निर्देशन होता है जैसा कि हमारे संस्कृत साहित्य में कहा गया है कि-

लालयेत् पंचवर्षाणि दशवर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्रं मित्रवदाचरेत्।।

अर्थात पुत्र का पांच वर्ष तक लालन करें। दस वर्ष तक **ताड़न** करें, सोलहवां वर्ष लग जाने पर उसके साथ मित्रवत व्यवहार करना प्रारंभ कर दें। क्या इसके ताड़न शब्द के शब्दार्थ, भावार्थ या प्रसंगार्थ कहीं पर भी इस बात का आभास होता है कि 5 वर्ष से लेकर 15 वें वर्ष तक बच्चे को पीटते रहना चाहिए, बिल्कुल भी नहीं, बल्कि यहां ताड़ने का मतलब उस पर दृष्टि रखने या उसका मार्गदर्शन करने से है, इसी प्रकार यदि हम ढोल को लगातार पीटते जाएं तो उसमें से कोई मधुर स्वर-ताल नहीं निकल सकता। इसी प्रकार यदि हम पशु पर नजर ना रखें तो वह जंगल में कहीं भी जा सकता है, कुल मिलाकर के ढोल और पशु के लिए ताड़ना का अर्थ केवल देखना या नियंत्रित रखना है। अब प्रश्न उठता है कि तुलसीदास जी ने गवाँर शूद्र और नारी के लिए ताड़ना किस भाव से लिखा है। वास्तव में इस चौपाई में (,) कहां लगाया जाना है, यह भी एक विचारणीय प्रश्न है कि तुलसीदास जी **(1) ढोल, (2) गवाँर शूद्र, और (3) पशुवत नारी की बात कर रहे हैं या '(1)ढोल (2) गवाँर (3) सूद्र (4) पसु और (5) नारी'** की। यदि वे इन पांचों की बात कर रहे हैं तो फिर एक प्रश्न उठता है कि गाय भी एक पशु है और तुलसीदास जी ने गाय को सदैव पूज्यनीय माना है, तो क्या वे गाय की पिटाई कराना चाहते हैं संभवतः बिल्कुल भी नहीं। तुलसीदास जी ने लिखा है कि विष्णु का राम के रूप में अवतार ही विप्र, गाय, देव और संतों की सुरक्षा के लिए हुआ था, वे लिखते हैं-

दोहा- विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गोपार।।

इन सभी प्रसंगों और संदर्भों के आधार पर यही कहा जा सकता है कि यहां ताड़ना का अर्थ है केवल और केवल निर्देशन, मार्गदर्शन और अवलोकन।

अब हम एक और बात पर विचार करें कि जिस चौपाई में नारी की आलोचना की गई है, और श्रीरामचरितमानस को नारी निंदक के रूप में प्रस्तुत करने का पूर्वाग्रह युक्त प्रयास किया जाता रहा है। वह किस प्रसंग में और किसके द्वारा श्रीरामचरितमानस में कहलवाई गई चौपाई है- यह प्रसंग है जब श्रीराम लंका में अपने वानर-भालू की सेना के साथ लंका पर चढ़ाई करने के लिए मार्ग प्राप्ति हेतु समुद्र से तीन दिन तक अनुनय-विनय और प्राथना करते हैं, किंतु जब समुद्र मार्ग नहीं देता, तब वे क्रोधित होकर के अपने धनुष में अग्निबाण संधान करते हैं, जिससे समुद्र के जीव जंतुओं में भयानक बेचैनी पैदा होती है। परिणामस्वरूप जीवों के दबाव और सुरक्षा

को ध्यान में रखते हुए समुद्र ब्राम्हण का रूप धारण करके श्रीराम से कहता है -

कनक थार भरि मनि गन नाना। बिप्र रूप आयउ तजि माना।।
गगन समीर अनल जल धरनी। इन्ह कइ नाथ सहज जड़ करनी।।
तव प्रेरित मायाँ उपजाए। सृष्टि हेतु सब ग्रंथनि गाए।।
ढोल गवाँर सूद्र पसु नारी। सकल ताड़ना के अधिकारी ।।

अर्थात समुद्र कहता है की हे प्रभु **आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी** यह सभी प्रकृति से ही जड़ हैं, और प्रभु आपने अपनी माया और शक्ति के बल से सृष्टि के संचालन के निमित्त ही इन्हें जड़ बनाया है, तथा इनका मार्गदर्शन और निर्देशन भी आप ही करते हैं। उपरोक्त दोनों चौपाइयों से स्पष्ट होता है कि जल जड़ है और वह किसी को भी बिना मार्गदर्शन के मार्ग उपलब्ध नहीं कराता। एक यहां अन्य बात भी विचारणीय है कि जहां समुद्र अपनी गलती स्वीकार कर रहा है, वहीं अचानक नारी और शूद्र की आलोचना कैसे करने लगा, यहां हमें समझना होगा कि नारी वैदिक संस्कृत के शब्द नारा का ही अवधी भाषा रूपांतरण है नारा को मनुस्मृति के अध्याय 1 श्लोक क्रमांक 10 में परिभाषित करते हुए कहा गया है कि-

आपो नारा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनव:।
ता यदस्यायनं पूर्वं तेन नारायण: स्मृत: ।।

अर्थात जल और जीवों का नाम नारा है, **नार** यानी जल और आयन का आशय है घर या निवास, इसलिए विष्णु भगवान को नारायण (नार+आयन) कहते हैं अर्थात जल में ही है निवास जिसका, उसको ही नारायण कहते हैं। जल को नार इसलिए कहा गया है क्योंकि वह नर (विष्णु) द्वारा ही पैदा किया गया है अर्थात सृष्टि पूर्व नर स्वयंभू पुरुष विष्णु का निवास स्थान **नार** अर्थात जल ही था। यहाँ नार स्वयं समुद्र है इसलिए प्रसंगानुसार समुद्र ही अपने को नारी कहता है ना की समस्त स्त्री जाति को।

यदि हम समग्र रूप से श्रीरामचरितमानस का अध्ययन करते हैं तो अनेक ऐसे प्रसंग हैं, जहां नारी का सम्मान पुरुषों के सम्मान से, किसी भी रूप में कम प्रदर्शित नहीं किया गया है। उदाहरण के लिए जब कैकेई कोप भवन में राजा दशरथ से दो बर मांग कर एक में अपने पुत्र भरत को राजा और दूसरे में राम को 14 वर्ष का वनवास देती है, उस समय राजा दशरथ कैकेयी के प्रति किसी शक्ति का प्रयोग नहीं करते और ना ही उसका कोई अपमान करते बल्कि उससे भी अनुनय-विनय और आग्रह करते हुए यही कहते हैं कि राम के वनवास जाने पर मेरा जिंदा रहना संभव नहीं होगा और तुम्हें वैधव्य जीवन जीने के लिए विवश होना पड़ेगा।

दूसरे प्रसंग में जब राम बालि को अपने बाणों से भेद देते हैं तब बाली कहता है कि-

मैं बैरी सुग्रीव पियारा। कारण कवन नाथ मोहिं मारा।।

तब राम बाली को डांटते हुए जवाब देते हैं कि-

अनुज बधू भगिनी सुत नारी। सुन सठ कन्या सम ये चारी।।
इन्हहिं कुदृष्टि बिलोकय जोई। ताहि बधे कछु पाप ना होई।।

अर्थात अरे मूर्ख, सठ तुझे इतना भी मालूम नहीं है कि छोटे भाई की पत्नी, बहन, पुत्र की पत्नी और कन्या ये चारों बराबर होती हैं और यदि कोई इन पर कुदृष्टि डाले तो उसका बध करने में भी कोई पाप नहीं लगता, बल्कि यह तो समाज हित में ही होता है। जबकि यहां राम भली-भांति जानते थे कि यदि उन्होंने बाली से दोस्ती कर ली तो रावण

को परास्त करना उनके लिए बहुत ही आसान होगा, किंतु उन्होंने नारी के सम्मान के लिए बाली का बध किया। एक प्रकार से नारी के सम्मान के लिए राम किसी भी सीमा तक जा सकते थे। श्रीरामचरितमानस में नारी को एक कुशल परामर्शदाता के रूप में प्रस्तुत करते हुए लिखा हैं-

मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावन करसि न काना ।।

अर्थात बाली तू दुष्ट अन्यायी और घमंडी तो है ही साथ ही विवेकहीन भी है, तभी तो तूने अपनी नीतिज्ञ धर्मपत्नी तारा की नीतिगत और उचित परामर्श को भी नहीं सुनता। तुलसीदास जी ने मानव जीवन में स्त्रियों के प्रति सम्मान को प्रतिस्थापित करते हुए लिखते हैं -

जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी।।

अर्थात जो पुरुष अपनी पत्नी के अलावा अन्य सभी स्त्रियों को अपनी मां के समान समझता है, उसी के हृदय में ईश्वर का वास होता है, इसका सामान्य आशय है कि ईश्वर को पाने की सामान्य शर्त सदाचरण है। जबकि इसके विपरीत जो पुरुष दूसरी स्त्रियों के संग संबंध बनाता है वह पापी होता है और वह ईश्वर से हमेशा दूर रहता है। अर्थात अपनी पत्नी के अतिरिक्त अन्य समस्त स्त्रियों को मां के समान पूज्यनीय और सम्मानीय समझना चाहिए। जब हनुमान सीता की खोज के लिए जाते हैं और रास्ते में उन्हें सुरसा नाम की राक्षसी मिलती है, तब उसके साथ भी हनुमान का व्यवहार मात्रवत् रहता है, यहां तुलसीदास जी ने लिखा है।

'तब तव बदन पैठिहउँ आई। सत्य कहउँ मोहि जान दे माई ||

एक अन्य प्रसंग में तुलसीदास जी नारी को विपत्ति के समय सबसे बड़े सहयोगी के रूप में परिभाषित करते हुए लिखते हैं -

धीरज, धर्म, मित्र अरु नारी। आपद काल परखिए चारी।।

इस चौपाई से भी सिद्ध होता है कि नारी योग्य, समझदार और समर्पित ही होती है, तभी तो उसे महान विपत्ति के समय भी परखने या परीक्षा के योग्य समझा गया है।

उक्त सभी प्रसंगों से स्पष्ट होता है कि तुलसीदास जी नारी का अपमान नहीं कर सकते थे और उक्त विवरण से '**यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:**' ही सिद्ध होता है। तुलसीदास जी इस उक्ति को सर्वथा सिद्ध करने में सफल रहे हैं और उन्होंने नारी का अनेक स्थानों में सम्मान के साथ वर्णन किया है। अतः हमें तमाम पूर्वाग्रहों से उठकर विचार करना चाहिए।

समीक्षा-

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा श्रीरामचरितमानस में वर्णित विभिन्न प्रसंगों में नारी जाति का वर्णन विभिन्न रूपों में दृष्टिगोचर होता है केवल एक स्थान को छोड़कर शेष अन्य सभी जगह नारी को श्रेष्ठतम स्थान दिया गया है और यह श्रेष्ठता नारी की सृजनात्मक शक्ति, सहनशीलता और वात्सल्य के कारण प्राप्त हुआ है, ना की किसी की कृपा से। कहने का आशय यह है कि नारी सदैव से ही भारतीय हिंदू समाज में पूज्य रही है और जब भी उसका अपमान हुआ है या होता है, संपूर्ण समाज भयानक संकट के दौर से गुजरा है या गुजरता है। गोस्वामी तुलसीदास जी पर नारी निंदक का आरोप लगाने वालों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि काल, परिस्थिति और कथोपकथन के आधार पर पात्रों के कथन निर्धारित किए जाते हैं, इसके पश्चात भी यदि किसी को कोई संदेह रहता है तो समस्त हिन्दू धर्माचार्यों को बैठकर सामाजिक समरसता को बनाए रखने हेतु उचित कदम उठाना चाहिए। क्योंकि

श्रीरामचरितमानस की एक चौपाई के कारण समाज में आए वैचारिक संकट और सामाजिक असंतोष को दूर करना एक सभ्य समाज की जिम्मेदारी भी है और समय की मांग भी।

संदर्भ ग्रंथ -

- गोस्वामी तुलसीदास, श्रीरामचारितमानस,गीताप्रेस गोरखपुर (2010)
- https://www.bbc.com/hindi/india-64327843
- नागर अमृतलाल, मानस का हंस (1990) राजपाल एंड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली-6
- सरस्वती महर्षि दयानंद, सत्यार्थ प्रकाश (106वाँ संस्करण 2021)आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली 110006